परिवर्तन PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

हमार अंगना

तक्ष शिला

अंक 9 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | सितम्बर 2020 - मार्च 2021

परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार आंगना के अंक 9 में आपका स्वागत है आईये संक्षिप्त जानकारी लेते है बालघर आंगन के गतिविधियों के बारे में....

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

परिवर्तन बालघर आंगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार अंगना के विशेष अंक में, मैं आपका स्वागत करती हूँ।

बालघर आँगन परिवर्तन की शिक्षा इकाई की उप-इकाई है, जो पिछले कई वर्षों से लगातार आंगनवाड़ी केंद्र के 3-6 वर्ष तक के बच्चों एवं 46 सेविकाओं के साथ जुड़कर काम कर रहा है। बालघर का उद्देश्य बच्चों को खेल, कविता, कहानी, के माध्यमों से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान करवाना, साथ ही साथ कार्यक्षेत्र के आंगनवाड़ी केंद्रों को सुदृढ़ करने हेतु सभी सेविकाओं का मार्गदर्शन करना है।

बच्चों के साथ हमने काम किया है और यह देखा है कि ज्यादातर बच्चे टीके और इंजेक्शन के डर के कारण आंगनवाड़ी केंद्र पर जाने से एवं सेविकाओं के साथ बात करने से डरते हैं क्योंकि बचपन में उन्हें जो भी टीके लगे होते हैं वे आंगनवाड़ी केंद्र पर ही लगे होते हैं। ऐसे में उन्हें लगता है कि यह जगह केवल टीका लगाने के लिए ही है, अगर हम जायेंगे तो टीके लग जायेंगे । पर पिछले दिनों, परिवर्तन की टीम के सहयोग से बच्चों की इस अवधारणा को दूर करने में मदद मिली है। उन्हें केंद्र पर पहुँचाने एवं खेल- खेल में नयी- नयी जानकारियों से रूबरू करवाने का प्रयास किया गया है साथ ही साथ बच्चों का जुड़ाव केंद्र से और बेहतर कैसे हो सकता है, इस दिशा में भी कदम उठाए गये हैं। पत्रिका के इस अंक में हम पिछले वर्ष की गतिविधियों की एक छोटी सी झलक पेश कर रहे हैं, साथ ही साथ कोविड महामारी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में की गयी पहल को आप सभी के साथ साझा कर रहे हैं।

यह पत्रिका आंगनवाड़ी से जुड़े बच्चो, अभिभावकों और सेविकाओं के योगदान और सहयोग से बनी है। परिवर्तन की पूरी टीम की ओर से मैं आप सभी को धन्यवाद देती हूँ और आशा करती हूँ कि हमारी यह कोशिश आप सभी को पसंद आएगी। आप अपनी प्रतिक्रिया हमारे साथ ज़रूर साझा करें।

सप्रेम
मधुबाला,
फैसिलिटेटर, बालघर आंगन, परिवर्तन

हमारी कार्य-प्रणाली

परिवर्तन के अंतर्गत बालघर आँगन आस-पास के कुल 21 गाँवों के 46 आंगनवाड़ी केंद्र के साथ कार्यरत है। हमारा काम 3 से 6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के अन्दर मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को जगाने और उसको सशक्त करने का प्रयास करना है। मानव जीवन में यह उम्र ही ऐसी उम्र होती है जिसे गीली मिटटी कहा जाता है अर्थात यह एक ऐसी आयु सीमा है जिसमें बच्चों का सर्वाधिक बौद्धिक विकास होता है और उसे हम जिस रूप में ढालना चाहते हैं वे ढल जाते हैं।

बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए हम उनके साथ खेल-खेल के माध्यम से उनको एक सफल नागरिक के रूप में तैयार करते हैं ताकि बच्चे यहाँ से जाकर अपने केंद्र पर सबके लिए प्रेरक बच्चों के रूप में उभरें जिससे सभी बच्चे लाभान्वित हो सकें।

क्लास के लिए हमलोगों के पास 6 माह की एक कार्य-योजना है। इस कार्य-योजना को बनाते समय हमने बच्चों की उम्र तथा उनकी बौद्धिक स्थिति को समझने का प्रयास किया है। जिसके लिए हम दिल्ली में अवस्थित "जोड़ो ज्ञान" केंद्र, "प्रथम संस्था", "अश्वथ" किताब तथा "दिल्ली पब्लिक स्कूल" की मैडम को धन्यवाद देना चाहते हैं जिनके सहयोग से बच्चों के लिए कार्य-योजना तैयार हो पाई।

हमारी कार्ययोजना में मुख्य रूप से तरह-तरह की आवाजों की पहचान, अपना परिवार, देशभक्ति,रुचिकर भोजन और तरह-तरह के पोषक तत्वों की जानकारी को शामिल किया गया है, ताकि बच्चे इन आवश्यक बातों को खेल-खेल के माध्यम से समझ पायें।

बच्चों की पसंद

बच्चो के सम्पूर्ण विकास के लिए परिवर्तन परिसर में बालघर आंगन का निर्माण किया गया। जिसमें कविता, कहानी, व्यायाम, आकार परिवार तथा बॉयोस्कोप की सहायता से बच्चों के सम्पूर्ण विकास का भरपूर प्रयास किया जाता है। इन सभी क्रियाकलापों को बच्चें बहुत पसंद करते है। परिवर्तन परिसर में बच्चों के लिए एक टायर ग्राउंड का निर्माण किया गया है जिसे बच्चे सबसे ज्यादा पसंद करते है। इसके अलावा कृषि से जुड़ी छोटी- छोटी गतिविधियों के प्रति भी बच्चे बहुत उत्सुक रहते हैं जैसे मौसमी सब्जी, गोभी,टमाटर, आलू लगाना और इन सब पौधों में मग से पानी देना बच्चे बहुत पसंद करते है।

रंगों कि बातें -"मुझसे नहीं हो पायेगा" से "ये कितना आसान है" तक का सफ़र

रंग सभी को बहुत पसंद होता है। रंग ऐसा माध्यम है जो हर उम्र के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। खासकर जब बात बच्चों की हो तो बच्चों का संबंध रंग, रेखा, खेल तथा रचना से खास होता है। बच्चों के साथ रंग-रेखा का खेल कराने का अवसर मुझे भी बालघर आँगन के बच्चों के साथ मिलता था पर इस वर्ष कोरोना के कारण सभी आंगनवाड़ी केंद्र बंद थे इसीलिए मैं उन बच्चों से मिल नहीं पाया और इसकी जगह मुझे सेविका के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। सेविकाओं का कार्य भी बच्चों कि रचनात्मकता को बढ़ावा देना है और खेल- खेल के माध्यम से बच्चों के मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए सहायक का काम करना है। यह बहुत ही अहम् है कि कल के भविष्य निर्माताओं को रंगों कि जानकारी सेविकाओं के माध्यम से दी जाए। इस वर्ष मुझे आंगनवाड़ी केंद्र के लिए कहानी, कविता को और रोचक बनाने के लिए सेविकाओं को तैयार करना था। मैंने लगभग 30 सेविकाओं को बालगीत और बालकथा को कैसे रोचक और बच्चों के बीच लोकप्रिय बनाया जाए यह बतलने का प्रयास किया। इसके लिए मैंने उन सभी सेविकाओं को आसानी से उपलब्ध होने वाले कागज से कहानी कविता के पात्रों की कठपुतली बनाना सिखाया। सेविकाओं को यह बात पहले तो बहुत ही अजीब लग रही थी। उनका कहना था कि "आज तक हमलोग कभी चित्र बनाये ही नहीं है तो कठपुतली तो हमारे लिए बहुत बड़ी चीज है। इसलिए हमसे नहीं हो पायेगा" पर मेरे प्रोत्साहन से उनलोगों ने कर के दिखलाया। सभी ने अपने -अपने पात्रों का बहुत ही सरलता के साथ चित्रण किया तथा कठपुतली भी बनायी। "मुझसे नहीं हो पायेगा" से "यह तो कितना आसान है" तक की प्रतिक्रिया का उनका सफ़र मैंने चंद मिनटों में ही महसूस किया। बड़ी लगन के साथ उनलोगों ने कठपुतली बनायी। तथा आगे भी इसी तरह के कार्य के लिए इच्छा जाहिर की। इसका परिणाम यह हुआ कि आगे की योजना में सेविकाओं के साथ "कठपुतली कार्यशाला" की योजना बनायी गयी।

वास्तव में उनके साथ काम करने से पता चला कि बच्चों के साथ काम करते- करते उन सेविकाओं में भी सीखने की, समझने की ललक हो गयी है और किये गए कार्यो में सफलता प्राप्त करते ही ख़ुशी को प्रस्तुत करने का तरीका भी बच्चों की तरह ही है। मुझे उन सेविकाओं- जिन्हें भविष्य निर्माता की बुनियाद कहा जाता है, उन्हें प्रशिक्षण देते खुद में गौरव महसूस हुआ।

राजवर्द्धन
प्रशिक्षक – घरौंदा (कला-संकाय)
परिवर्तन

समुदाय क्लास – चुनौती से सफलता तक का सफ़र (कार्य-अनुभव)

इस बार 2021 के सत्र में समुदाय के बच्चों के साथ काम करने का मौका मिला। वैसे समुदाय के बच्चों के साथ हमारा काम तो होता ही था पर इस बार कोविड -19 के कारण आंगनवाड़ी केंद्र बंद होने से हमारा क्लास आंगनबाड़ी केंद्र पर नहीं हो पाया। बच्चे घर पर रहने लगे, उन्हें कोई नयी जानकारी नहीं मिल पा रही थी। हम जानतें हैं कि यही वह उम्र है जिसमें

बच्चों का मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास सबसे ज्यादा होता है। इस बात की अहमियत को समझते हुए हमलोगों ने समुदाय में ही बच्चों को इकठ्ठा कर खेल- खेल के माध्यम से उनका क्लास बालघर आँगन पाठ्यक्रम के आधार पर प्रारंभ किया। इस पाठ्यक्रम की अवधि लम्बी थी इसलिए हमें यह चिंता भी सता रही थी कि पता नहीं समुदाय में इतने लम्बे समय तक बच्चे नियमित हो पाएंगे कि नहीं। फिर भी मैंने पांच समुदाय के साथ काम शुरू किया। शुरू के एक-दो दिन तो बहुत अच्छे से सब कुछ चल रहा था पर धीरे-धीरे समस्या सामने आने लगी। बड़ों के साथ काम करना और 3 से 6 साल के बच्चों के साथ काम करने का अनुभव काफी अलग होता है। बच्चे क्लास के समय ही सो जाते थे तो कभी बच्चे नानी के घर तो कभी बुआ के घर घूमने चले जाते थे। कभी -कभी उनकी माँ आकर बोलती "आज छोड़ दीजिये आज उसका मन नहीं कर रहा" तो कभी बच्चे माँ के साथ धान की कटाई में खेत घूमने चले जाते थे। यह सब देखते हुए मैं अपने क्लास को लेकर फिर से चिंतित हो गयी, पर धीरे-धीरे समुदाय के अभिभावक भी हमारे काम को समझने लगे कि "परिवर्तन की मैडम जी रोज अपने समय के अनुसार हमारे गाँव में आ जाती है तो हमारे बच्चों के ही भविष्य के लिए ही ना और हमलोग इसकी महत्त्व को समझ नहीं पा रहे। " इसके बाद अभिभावक अपने बच्चों को लेकर निर्धारित समय और स्थान पर पहुँचाने लगे। उस समय मुझे किसी कार्य के उपरांत उसकी सफलता का फल कितना मीठा होता है यह स्वाद चखने का अवसर प्राप्त हुआ। बच्चों को अपनी ओर आते देख तथा क्लास में नियमितता देखकर मैं बहुत खुश हुई कि मुझे फिर से अवसर मिल रहा है एक सफल नागरिक की नींव तैयार करने का। इसके साथ ही साथ समुदाय का सहयोग, विश्वास तथा जुड़ाव और प्रबल होता गया।

प्रमुख कार्यशाला

सेविका प्रशिक्षण – 2020

दिनांक: 28-29 दिसंबर 2020 एवं 15-17 मार्च 2021

स्थान: परिवर्तन परिसर

उद्देश्य: इस कार्यशाला का उद्देश्य यही है कि सेविका, सहायिका को नई- नई गतिविधियां, बच्चों के लिए पठन / पाठन सामग्री का निर्माण तथा नई तकनीक से अवगत कराया जा सके ताकि वो इन गतिविधियों को सीख कर अपने केंद्र के बच्चों को और बेहतर ढंग से इसका लाभ दे पाएं तथा आंगनवाड़ी केंद्र को और सुदृड बना सकें।

कार्यशाला स्थल की सजावट राजवर्द्धन जी द्वारा बनायी गयी कठपुतलीयां, बच्चों की रचना तथा पोस्टर से हुई।

सिखायी गयी गतिविधियां :

- प्रार्थना।
- व्यायाम।
- कहानी- पाठ।
- बालगीत।
- कंप्युटर का बुनियादी ज्ञान।
- TLM निर्माण।
- कठपुतली के माध्यम से बालकथा वाचन।

प्रशिक्षिका की कलम से

इस सत्र में कोरोना महामारी के कारण सभी आंगनवाड़ी केंद्र बंद होने से हमारा कार्य, केंद्र पर ना कराकर समुदाय में कराया गया। सभी बच्चों की प्रतिभा अतुलनीय है। बच्चे काफी सक्रिय और अनुशासित रहे। इस बार क्लास लेने में जहाँ हमलोगों को बच्चों का साथ मिला वहीँ मौसम के कारण बहुत सारी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। इसी सत्र में अत्यधिक ठण्ड भी हुयी| इसके अतिरिक्त इस वर्ष विश्वव्यापी महामारी- कोरोना के कारण बहुत से बच्चे क्लास से वंचित रह गए। बच्चे अपने क्लास से वंचित ना हों और हमारा जुड़ाव उनसे बना रहे इसके लिए परिवर्तन की तरफ से हमलोग समुदाय में क्लास कराके उन बच्चों तक अपनी पहुँच बनाने हेतु प्रयासरत रहे।

इसी तरह सही पोषण के लिए हमलोगों ने एक नये कार्यक्रम को अपने कामों से जोड़ा। वैसे ये काम हमलोगों से भिन्न नहीं है पर पोषण को ध्यान में रखते हुए उसकी रिपोर्ट तैयार कर सेविकाओं को जागरूक करना तथा पोषण के विभिन्न आयामों को समझाना, नया काम था। काम मुश्किल जरुर थे पर नियमित प्रयास से हमलोगों ने बहुत से सकारात्मक परिणामों को प्राप्त किया और इस गतिविधि से नया अनुभव भी अर्जित किया। इस विशेषांक में हमारे द्वारा प्रमुख गतिविधियों का जिक्र किया गया है। उम्मीद करते हैं कि आप हमारे इस विशेषांक को पढ़ेंगे एवं अपनी प्रतिक्रिया भी देंगे। इसी आशा के साथ।

रिंकू कुमारी, सहायक फैसिलिटेटर, बालघर आँगन, परिवर्तन, नरेन्द्रपुर, सिवान

कुछ नए प्रयास

गतिविधि शिविर

कहानी पाठ एवं बालगीत

विशेषज्ञ – रिमा सिंह, सुमन वर्मा (कला प्रशिक्षक – डी.पी.एस पटना)

सहयोगी – मधुबाला देवी (बालघर आंगन - परिवर्तन)

उद्देश्य – बच्चों को कहानी बहुत पसंद होती है। वे कहानी सुनना तथा सुनाने में काफी रूचि रखते हैं। कहानी एक ऐसा माध्यम है जिससे हम बच्चों को कहानी पाठ का मनोरंजक समय देने के साथ साथ जीवन जीने की शैली भी सिखा सकते हैं। हमने पाया है कि कहानी पाठ के समय बच्चे कहानी में छुपे सन्देश को बहुत ही शांतिपूर्वक सुनते हैं।

परिवर्तन में कहानी पाठ का एक शिविर रखा गया जिसमें हमारे 21 गाँवों के कुल 30 बच्चों ने भाग लिया। जिसमे बच्चों ने "रमन सिंह की चालाकी (दादी कि मजेदार कहानियां)" सुनीं। साथ ही साथ बच्चों को कठपुतली के माध्यम से कहानी सुनाई गयी जिसके कारण बच्चों को कहानी से जुड़ने में मदद मिली।

इस शिविर में बच्चों को यह सन्देश भी दिया गया कि सबको आपस में मिलकर रहना चाहिए, एकता में बल होता है । दोस्ती का महत्त्व समझाते हुए बच्चों के सामने कहानी पाठ कराया गया।

आइये जानिए हमारे कुछ प्यारे बच्चो के बारे में

नाम – शियांश कुमार, उम्र – 4 वर्ष , ग्राम – नरेन्द्रपुर

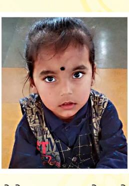

शियांश कुमार नरेन्द्रपुर का रहने वाला है। जब वह पहली बार अपनी बुआ के साथ बालघर आँगन में क्लास करने आया तो बुआ का हाथ छोड़ ही नहीं रहा था। बुआ उसे बार बार हाथ छोड़ने बोल रही थी पर वह स्तब्ध खड़ा बस मुझे ही गौर से देख रहा था मानो उसके मन में मुझे लेकर कई प्रश्न उठ रहे हों। उसकी आँखें मुझसे मेरा परिचय से लेकर मेरे स्वभाव सम्बंधित बहुत सारे सवाल जबाब कर रही थीं। मानो वह अपनी आँख से ही मेरा फोटो स्कैन कर रहा हो। पहला दिन ना तो वो रोया और ना ही किसी से कुछ बात किया। बस वहां जो भी हो रहा था वो सभी गतिविधि को ध्यान से निहार रहा था। बच्चों का दिल निश्छल होता है वो सभी से दोस्ती तुरंत कर लेते है इसलिए क्लास के अन्य बच्चे उससे बात करने का प्रयास किये पर सभी विफल रहे। दूसरे दिन जब वह दुबारा अपने पापा के साथ आया तो मुझे देखते ही जोर- जोर से रोने लगा जैसे मैंने उसे कोई कड़वी दवा पिला दी हो। उसके पापा भी शियांश के साथ कुछ देर सभागार में बैठे रहे फिर बड़ी मुश्किल से वह बालघर क्लास में आया। कुछ दिनों तक उसकी आँखें परिवर्तन के नाम पर गंगा-यमुना बरसाई फिर देखते ही देखते शियांश पूरे क्लास का हीरो बन गया। अब वह रोज परिवर्तन अपने पापा, चाचा तथा दीदी के साथ आने लगा। इतना ही नहीं उसकी माँ से पता चला कि वह परिवर्तन जाने का इंतजार सुबह जागने से ही करने लगता है। यहाँ कि गतिविधि को अब वह लगन से सीखने लगा। शियांश छोटा था इसलिए इसके साथ मुझे ज्यादा मेहनत करनी पड़ी। पर कहा जाता है ना कि "अंत भला तो सब भला।" शियांश को ख़ुशी ख़ुशी क्लास में देख कोई परेशानी याद ही नहीं आती। अब शियांश परिवर्तन छोड़ने आये पापा को नियमित रूप से "बाय पापा" बोलकर ही बालघर में प्रवेश करता है और मुझे देखकर "नमस्ते मिस" कहता है।

नाम –चंचल कुमारी, उम्र – 4 वर्ष, ग्राम – नरेन्द्रपुर

जब चचंल पहली बार बालघर आँगन में क्लास के लिए अपने पापा के साथ आई तब वह पहली बार घर से बाहर निकली थी और ज्यादा बच्चों के साथ रहने की उसे आदत नहीं थी। इसलिए वह बच्चों के बीच बैठ नहीं रही थी। मै बार-बार उसको बैठने के लिए आवाज लगा रही थी परन्तु लगता था कि वह मेरी बात सुन ही नहीं रही है। जब क्लास समाप्त होनेवाली थी तब मैंने सारे बच्चों को समूह गतिविधि करने को कहा –" तुम सब चार-चार का ग्रुप बना लो। " सारे बच्चे ग्रुप बना के खेलने लगे लेकिन चंचल एक जगह पर ही खड़ी रही तब मै उससे बोली –" तुम भी इस ग्रुप में बैठ जाओ," पर वह चुप- चाप खड़ी ही रही। मै फिर उससे बोली-" चंचल तुम भी इन बच्चों के साथ बैठ जाओ," तब वह तुतलाकर बोली- "मै इन बच्चों के साथ नहीं थेलूँगी"। फिर मैंने उसे ब्लाक्स दिया और वह बलाक्स से रेलगाड़ी बनाकर खेलने लगी। मै वहीं बैठ गई और पूछी –" क्या बना रही हो?" तब वह बोली -" मेरी मम्मी मुझको गुड बाबू नहीं बोलती है, केवल बाबू को हर सामान खरीदती है। " मैं उसके पीठ पर हाथ रख कर बोली-" तुम बहुत अच्छी बच्ची हो, मै तुम्हारे मम्मी से बोलूंगी की चंचल को आप गुड बच्ची क्यों नहीं बोलती है" तब वह बोली -" ठीक है। " छुट्टी का समय हो गया था सभी बच्चे गेट पर चले गए परन्तु चंचल अपने पापा कि राह देख रही थी। कुछ समय बाद उसके घर से उसके चाचा लेने आये। -"मैडम जी चंचल बदमाशी तो नहीं की?" चंचल के बारे में उसके चाचा से मैं बोली-चंचल तो अच्छी बच्ची है।" अगले दिन चंचल आई और बच्चों के साथ खेलने लगी। इसी तरह चंचल परिवर्तन की नियमित छात्रा बन गई। चंचल को बालघर के बच्चे भी बहुत चाहने लगे। जिस दिन चंचल बालघर नहीं आती थी, बच्चे पूछने लगते थे –"मैडम जी आज चंचल क्यों नहीं आयी? इस तरह चंचल बालघर की नियमित छात्रा बन गई एवं सभी बच्चों में घुल मिल गई।

नाम – रिया कुमारी, उम्र – 5 वर्ष, ग्राम – रुईया बंगरा

रिया अपने मम्मी पापा की एकलौती बेटी है। परिवार के सभी लोग उसे प्यार दुलार करते है। जब मैंने समुदाय में छोटे-छोटे बच्चों का समूह बनाकर क्लास लेना शुरू किया तब उस समूह में रिया नाम की लड़की भी थी। वह बहुत प्यारी थी और जितनी प्यारी थी उतना ही सुंदर तुतलाकर बोलती थी। क्लास शुरू होने से पहले वह पहुँच जाती थी और अपनी बोरी बिछाकर सभी बच्चो के आगे बैठ जाती थी। रिया बैठते ही अपना स्लेट निकालती थी और स्लेट पर अंडा का चित्र बनाकर दिखाती थी। अलग-अलग और भी चित्र बनाकर दिखाती थी जैसे-आलू,मूली, गाजर इत्यादि। वह बहुत ही चंचल है। चैन से एक जगह बैठती नहीं थी, लगातार बातें भी किया करती थी। समुदाय में रिया छोटी होने के बावजूद भी अपने सभी साथियों की अपेक्षा बहुत जल्दी अपना कार्य समझ जाती है और सभी को समझाती भी है।

बदलाव की तरफ अग्रसर हमारी सेविकाएँ

सेविका का नाम – उषा देवी,
आँगनवाड़ी केंद्र का नाम – बेलही

परिवर्तन में आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं से बहुत कुछ सीखने को मिला है। सेविका प्रशिक्षण में मैं हर बार भाग लेती हूँ क्योंकि हर बार हमलोगों को बहुत कुछ नया सीखने को मिलता है। हमलोग पटना से आई मैडम लोगों का इन्जार करते

हैं। इस बार के प्रशिक्षण में पटना की मैडम तो नहीं थीं फिर भी हमलोगों ने बहुत नयी गतिविधियां सीखीं। कंप्युटर आज तक देखे मात्र थे पर इस प्रशिक्षण के माध्यम से कंप्युटर चलाने का मौका प्राप्त हुआ।

सेविका का नाम – शहनाज़ हुसैन,
आँगनवाड़ी केंद्र का नाम – मियाँ के भटकन

ये हैं शहनाज़ हुसैन। अपने केंद्र की देख-रेख करना एवं कार्य प्रणाली का प्रभार संभालना इन्ही पर है। ये अपने कार्य को प्रतिदिन समय अनुसार पूरा कर लेती हैं। बच्चों के पोषाहार का भी उचित वितरण एवं बच्चो के लिए मेनू चार्ट के हिसाब से खाने की सामग्री तैयार कर दिया करती है। इनके केंद्र के बच्चे भी काफी जागरूक हैं। जो कुछ भी परिवर्तन से प्रतिदिन क्लास के जरिये सीख कर जाते हैं उसे अपने केंद्र की सेविका सहायिका तथा बच्चों के बीच अपनी भाषा में हाव भाव के साथ व्यक्त करते हैं जिससे अन्य बच्चों को भी सीखने का मौका मिलता है। सहायिका भी अपने स्तर से काफी सहयोग करती हैं जिससे आंगनवाड़ी सर्वे के दौरान इनके केंद्र की जो छोटो-मोटी कमियां थीं वे बिल्कुल ही दूर हो चुकी हैं। सेविका भी अपने केंद्र के प्रति क्या-क्या जिम्मेवारियां हैं एवं उसे कैसे पूरा करना है सभी को अपनी क्षमता एवं समझ के अनुसार उचित समय पर पूरा करती हैं, जिससे अभिभावक एवं बच्चे भी खुश रहते हैं।

वर्तमान समय में हमारे क्लास का स्वरुप

जब करोना महामारी के कारण सम्पूर्ण शिक्षण संस्थान आंगनवाड़ी केंद्र और सभी विद्यालय बंद पड़े थे, तब हमलोगों को एहसास हुआ कि इस समय बच्चो की शिक्षा की स्थिति क्या होगी? हमलोग जानते हैं कि 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों में 85% विकास होता है, चाहे वह शारीरिक विकास हो या मानसिक विकास। इस स्थिती में लाकडाउन हो जाने से बच्चों की विकास पद्धति रुक न गई हो इसी चिंता में परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा हमलोगों ने यथासंभव अभिभावक लोगों से सम्पर्क साधना शुरू किया। बातों ही बातों में बच्चो की वर्तमान स्थिति का अनुमान लगाने लगे, जिसमें यह पता चला कि बच्चे घर पर शरारत करते हैं और अभिभावकों की बातों की अनदेखी करते हैं। जब सेविका से बात की गयी तो पता चला कि सेविका लोगों का वर्तमान कार्य भी बच्चों के साथ न होकर पोषाहार तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में उलझ गया है। हमलोग सेविकाओं, सहायिकाओं, बच्चों एवं बच्चों के अभिभावकों को छोटे- छोटे समूह से जोड़कर कविता, कहानी, बालगीत, व्यायाम, इत्यादि कराने लगे ताकि बच्चे एवं सेविकाएं अपने

घर पर ही रहकर अभ्यास कर सकें। सेविका भी अपने कार्यों से जुड़ी रहे तथा नयी नयी गतिविधि सीखकर अपने केंद्र को मजबूत कर सके। इसके लिए परिवर्तन परिसर में सेविका प्रशिक्षण का भी आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में परिवर्तन के कृष्णा जी तथा राजवर्द्धन जी द्वारा कंप्युटर तथा कला कि प्रारंभिक जानकारी सेविकाओं के साथ साझा की गईं। इससे सेविकाएं बहुत ही ज्यादा प्रभावित हुईं। सेविकाओं से वर्तमान कार्य का विवरण भी लिया जा रहा है।

वर्तमान समय में बच्चों के छोटे -छोटे समूह बनाकर समुदाय में क्लास करायी जाती है।